शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

झारखंड के हस्तशिल्प उद्योग में जनजातीय महिलाओं की भूमिका

डॉ० नम्रता गौरव
असि.प्रो., समाज शास्त्र,
कमला नेहरू कालेज,
बिलासपुर विश्वविद्यालय,
बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

झारखंड के हस्तशिल्प उद्योग में जनजातीय महिलाओं की भूमिका

- डॉ० नम्रता गौरव

प्रस्तुत शोध-पत्र में अध्ययन क्षेत्र झारखंड के छह जिलों राँची, हजारीबाग, पूर्वी सिंहभूमि, डाल्टनगंज, दुमका, और लोहरदगा में सरकार द्वारा स्थापित हस्तशिल्प उद्योग व प्रशिक्षण केंद्रों में कार्यरत जनजातीय महिलाओं की भूमिका को रेखांकित किया गया है। वर्तमान में हस्तशिल्प उद्योग पर विभिन्न-दृष्टिकोणों से अध्ययन किया जा रहा है, परंतु प्रस्तुत शोध-पत्र में न सिर्फ हस्तशिल्प उद्योग में जनजातीय महिलाओं की भूमिका को रेखांकित किया गया है, वरन् जनजातीय महिलाओं की उपलब्धि के साथ स्थानीय स्तर पर उनकी समस्याओं का रेखांकन व विवेचना भी किया गया है।

विषय संकेत- *हस्तशिल्प उद्योग, ट्राइबल पेंटिग, काथा स्टिच एवं काशीदाकारी, बाँस-शिल्प, जूट क्राफ्ट, डोकरा आर्ट, ग्रास मैट बीभिंग, कोटा ज्वेलरी व पॉटरी, पेपर मेशी, चर्म शिल्प, कृत्रिम ज्वेलरी, व वूड क्राफ्ट।*

हस्तशिल्प उद्योग के रूप में वे रचनात्मक क्रियाकलाप हैं जो वास्तविक तौर पर प्राकृतिक संपदाओं के परंपरागत ज्ञान पर आधारित होती है। हस्तशिल्प उद्योग में विभिन्न विधाओं का प्रयोग होता है जो स्थानीय कला-संस्कृति से ज्यादा प्रभावित होती है। अत: विभिन्न राज्यों के एक ही हस्तशिल्प उद्योग में बुनियादी अंतर पाया जाना संभव हो सकता है।

वर्तमान में झारखंड में हस्तशिल्प उद्योग के तहत अनेक उद्योगों को शामिल किया गया है जैसे:- लाह की चूड़ियों का निर्माण, ट्राइबल पेंटिग, काथा स्टिच एवं काशीदाकारी, बाँस-शिल्प, जूट क्राफ्ट, डोकरा आर्ट, ग्रास मैट बीभिंग, कोटो ज्वेलरी व पॉटरी, पेपर मेशी, चर्म शिल्प, कृत्रिम ज्वेलरी, व वूड क्राफ्ट का निर्माण इत्यादि प्रमुख है।[2]

झारखंड के हस्तशिल्प उद्योग की इन विविधताओं का गहन शोध अवश्य किया जाना चाहिए, परंतु इसकी एक खास विशेषता भी है जिस पर ध्यान देना आवश्यक है। वित्तीय वर्ष 2008-09 में झारखंड के हस्तखिल्प निदेशालय के अनुसार करीब 1000 से अधिक जनजातीय महिलाओं तथा 250 पुरुषों के द्वारा पाँच करोड़ का कारोबार किया गया।[3]

जनजातीय महिलाओं द्वारा इस क्षेत्र में प्रशिक्षण के पश्चात् नित्य नये स्वयं के द्वारा किया जा रहा प्रयोग इस मायने में महत्त्वपूर्ण है कि हस्तशिल्प से तैयार मालों में प्रस्तुत की जाने वाली कलाकृतियों में दुहराव बहुत ज्यादा देखने को नहीं मिलती है।[4]

हस्तशिल्प उद्योग में कार्यरत जनजातीय महिलाओं की योग्यता इस मायने में भी महत्त्वपूर्ण है कि ज्यादातर महिलाएँ अशिक्षित होने के बावजूद वैसी ही कार्यदक्षता रखती हैं जैसा कि एक शिक्षित हुनरमंद व्यक्ति रखता है।[5] अर्थात् इस उद्योग में जनजातीय औरतों की भूमिका सराहनीय है जिसका अध्ययन नितांत आवश्यक हे।

उद्देश्य-क्षेत्र व निदर्शन-

प्रस्तुत शोध-पत्र के अध्ययन हेतु झाारखंड के छह जिलों पर जहाँ विभिन्न तरह के हस्तशिल्प उद्योग अथवा प्रशिक्षण केंद्र सरकार द्वारा लगाये गये हैं, को अध्ययन क्षेत्र के तौर पर चयनित किया गया है। ये छह जिले निम्न है : राँची, हजारीबाग, पूर्वी सिंहभूमि, डाल्टनगंज, दुमका, और लोहरदगा।

उद्देश्यपूर्ण निदर्शन के द्वारा हस्तशिल्प उद्योग में कार्यरत 300 जनजातीय महिलाओं का चयन कर अध्ययन किया गया है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

झारखंड के हस्तशिल्प उद्योग में जनजातीय महिलाओं की भूमिका

डॉ० नम्रता गौरव
असि.प्रो., समाज शास्त्र,
कमला नेहरू कालेज,
बिलासपुर विश्वविद्यालय,
बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

विश्लेषण-

झारखंड में शुरू से ही हस्तशिल्प उद्योग एक बड़ी आय-स्त्रोत के रूप में विकसित हुआ। परंतु एक सही योजना, व रोजगार के अवसरों का अभाव तथा बाजार की कमी के कारण यह प्राय: मृतप्राय उद्योग था। यद्यपि स्थानीय पहल व बाहरी सहायता के बाद इस उद्योग में न सिर्फ हुनर दिखाने का अवसर है बल्कि रोजगार भी है। वर्तमान समय में इस उद्योग में महिलाओं की बहुलता पुरुषों की तुलना में ज्यादा है। आज महिलायें हस्तशिल्प उद्योग को एक नयी दिशा प्रदान कर रही हैं।

हस्तशिल्प उद्योग में जनजातीय महिलाओं का योगदान-

झारखंड में हस्तशिल्प उद्योग की विशेषता यही है कि इसमें संलग्न यहाँ की स्थानीय जनजातीय महिलायें इतनी हुनरमंद हैं कि उनकी कलाकृतियाँ सिर्फ देश ही नहीं वरन् विदेशों में भी पसंद की जाती हैं। इन औरतों को विशेष तौर पर कुछ ज्यादा सीखलाने की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि आदिवासी बहुल यहाँ के स्थानीय समाज के परंपरागत पूर्व-त्योहार व संस्कृति में ही विविध कलाओं व हस्तशिल्प का निर्माण होता रहता है। साथ ही जिन हस्तशिल्पों का ज्ञान महिलाओं को नहीं था उसमें उन्होंने प्रशिक्षण के दौरान अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर अपनी संख्यात्मक भागीदारी को सुदृढ़ता प्रदान किया है। वर्तमान में महिलाओं की इसी हुनर को आय व राजस्व की प्राप्ति का स्त्रोत बनाने के लिए तथा इनकी कला में और निखार आये, सरकार ने अन्य महिलाओं को इससे जोड़ने की योजना बनाने के साथ प्रशिक्षण की व्यवस्था भी की है। हजारीबाग व बरही गाँव की महिलायें लाह की चूड़ियों व गहनों का निर्माण बड़े पैमाने पर कर रही हैं। यह काम संस्था मार्क्समैन सोसाइटी के सहयोग से किया जा रहा है। स्थानीय स्तर पर लगभग 290 महिलायें इससे जुड़ी हैं। इसी तरह डाल्टनगंज के पाटन व सदर प्रखंड में गैर 'सरकारी संस्था सोसाइटी फोर सोशल एंड इंवायरर्नमेंटल अवेयरनेस' की मदद से लाह की चूड़ियों के निर्माण का प्रशिक्षण दिया जा रहा है, जिसमें 12 गाँवों की लगभग 200 महिलायें जुड़ी हुई हैं।

झारखंड के अलग-अलग जिलों में चार प्रकार की ट्राइबल पेंटिग की जाती है। सोहराय व कोहबर पेंटिग हजारीबाग जिलें में, पैतकर पेंटिग पूर्वी सिंहभूम में जादोपेटिया पेंटिग दुमका जिले में विवाह व अन्य पूर्व-त्योहारों में घर की दिवारों व धार्मिक स्थलों को सजाने के लिए बड़े पैमाने पर की जाती है। व्यवसायिक दृष्टिकोण से सोहराय व कोहबर पेंटिग में 100 से ज्यादा महिलायें प्रशिक्षण की खासियत यह है कि इसमें महिलाओं द्वारा घरेलू प्राकृतिक रंगों का निर्माण भी किया जाता है। पूर्वी सिंहभूम जिले के धालभूमगढ़ के अबाडूबी गाँव में पैतकर पोटिंग का एक प्रशिक्षण सह उत्पादन केंद्र स्थापित किया गया है। अब तक 200 महिलाओं सहित कुल 80 कलाकार पैंतकर में प्रशिक्षित किये जा चुके हैं। इसके अलावा दुमका में स्थित हस्तशिल्प संसाधन सह विकास केंद्र ने अब तक 140 महिलाओं को जादोपेटिया पेंटिग में प्रशिक्षित किया है।

काथा स्टिच व काशीदाकारी एक अन्य महत्त्वपूर्ण हस्तशिल्प उद्योग है, जिसमें विविध रंगों के धागे से अनेक कृतियों व कल्पनाओं को मजबूत सिलाई के द्वारा कपड़ों पर उकेरा जाता है जिसके बाद कपड़ों की खूबसूरती देखते ही बनती है। प्राय: तसर की साड़ियों पर काथा स्टीच का कार्य कराने के लिए शांति निकेतन, कोलकाता के शिल्पियों का सहयोग लिया जाता रहा है। परन्तु अब राँची, कोडरमा, लोहरदगा, हजारीबाग, जमशेदपुर, डाल्टनगंज व पारसनाथ में प्रशिक्षण केंद्र खोलने का निर्णय लिया है। इन जिलों की लगभग 3400 महिलाओं को इससे जोड़ा जायेगा। काथा स्टीच में आधुनिकता का पुट डालने के लिए व इंब्राइडरी तथा जरदारी कार्य के लिए राँची व कोडरमा को सेंटर बनाये जाने की योजना है।

राज्य में बाँस बहुतायत में मिलता है। बाँस पर आधारित वस्तुयें झारखंड के प्राय: सभी जिलों में बनायी जाती है। परंतु वर्तमान समय में प्लास्टिक के टिकाऊ व सस्ते उत्पादों के समक्ष इनके बाजार में मांग को सुनिश्चित करने के लिए सरकार द्वारा विभिन्न जिलों में प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। भारत सरकार के हस्तशिल्प के विकास आयुक्त के सहयोग से कई योजनायें शुरु की गई हैं। बाँस के उपस्कर बनाने के लिए पाँच कलस्टरों में विशेष प्रशिक्षण जारी है। यह कलस्टर बंदगाँव (पं0 सिंहभूम), ईचागढ़ व खरसांवा (सरायकेला-खरसांवा), चाकुलिया (पूर्वी सिंहभूम), व चौपारण (हजारीबाग) में है। यहाँ 50 महिलाओं सहित

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

झारखंड के हस्तशिल्प उद्योग में जनजातीय महिलाओं की भूमिका

डॉ० नम्रता गौरव
असि.प्रो., समाज शास्त्र,
कमला नेहरू कालेज,
बिलासपुर विश्वविद्यालय,
बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

कुल सौ लोग प्रशिक्षित हुए हैं। इस प्रशिक्षण की खासियत यह है कि त्रिपुरा के ट्रेनर द्वारा इन्हें प्रशिक्षण दिया गया। इसके बाद इन शिल्पियों की आय 40-50 रूपये रोजाना से बढ़कर 150 से 200 रूपये हो गई है।

जूट क्राफ्ट के तहत गैर सरकारी संस्था छोटानागपुर क्राफ्ट डेवलपमेंट सोसाइटी की मदद से रांची में 30 महिलाओं को प्रशिक्षित किया गया है, जो जूट के बैग, फाइल व फोल्डर जैसी चीजें बना रही हैं। इस उद्योग की विशेषता यह है कि इसमें महिलाओं को मार्केटिंग की सुविधा भी प्रदान की गई है। वर्तमान में जमशेदपुर, गुमला व लोहरदगा की महिलायें भी इस उद्योग में बड़ी संख्या में भागीदारी निभा रही हैं।

डोकरा आर्ट एक प्राचीन कला है, जिसे मल्हार जाति के लोग परंपरागत रूप से करते आ रहे हैं, इसमें पीतल की विभिन्न प्रकार की आकृतियाँ बनायी जाती है। पूर्वी सिंहभूम के चाकुलिया प्रखंड के बंदगांव में डोकरा कलस्टर का विकास किया गया है। यहाँ 40 महिलाओं सहित कुल 70 कलाकार इसमें प्रशिक्षित किये गये हैं। इसके अलावा दुमका में 20 व हजारीबाग में 40 महिलायें प्रशिक्षित की गई हैं।

ग्रास मैट वीभिंग का काम वर्तमान में पूर्वी सिंहभूम जिले के पोटका प्रखंड के जानमडीह में चल रहा है। यहाँ 241 महिलायें एक खास किस्म के घास से फाइल, फोल्डर, टेबल मैट, रनर परदे, लैपटॉप बैग, व बोतल कवर जैसी चीजें बना रही हैं। इन महिलाओं को दक्षिण भारतीय डिजाइनर द्वारा प्रशिक्षित किया गया है।

राँची के बुंडू में 80 महिलाओं को टेराकोटा ज्वेलरी व पॉटरी डिजाइनिंग का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। गैर सरकारी संस्था 'आधार महिला सोसाइटी' के सहयोग से यह काम चल रहा है। वहीं दुमका में 120 तथा सरायकेला के निमुआडीह में 40 महिलाओं द्वारा अभी तक प्रशिक्षण प्राप्त किया गया है।

पेपर मेशी वह हस्तशिल्प उद्योग है जिसमें रद्दी कागज से विभिन्न प्रकार के सजावटी सामान बनाये जाते हैं। हस्तशिल्प संसाधन सह विकास केंद्र खूंटी ने पेपर मेशी ग्रुप तैयार किया है। दुमका में भी यह काम हस्तशिल्प विकास के द्वारा हो रहा है। इस उद्योग की खासियत यह है कि झारखंड के छऊ लोकनृत्य के लिए मुखौटा निर्माण के तौर पर इसकी शुरुआत हुई और धीरे-धीरे प्रशिक्षण के द्वारा इसमें सजावटी सामानों के निर्माण पर भी काम होने लगा। वर्तमान में मुखौटों के निर्माण का काम इचागढ़ (सरायकेला) व सिल्ली (राँची) में चल रहा है, जिसमें महिलाओं की अच्छी-खासी भागीदारी है।

हस्तशिल्प उद्योग में जनजातीय महिलाओं की वर्तमान उपलब्धियाँ-

खासकर महिलाओं के लिए परंपरा बदल रही है व लीक तोड़ने व लीक टूट रही है ऐसे में महिलाओं के आजीविका के साधन भी बदल रहे हैं। पेशा के साथ-साथ शौक भी बदल रहे हैं। हस्तशिल्प उद्योग ऐसा ही क्षेत्र है, जहाँ जनजातीय ग्रामीण औरतें अपनी पसंद का प्रोफेशन तलाशने में जुटी हैं। धीरे-धीरे ही सही, झारखंड में महिलायें हस्तशिल्प उद्योग में अपनी पहचान बनाने में लगी हुई हैं। वर्तमान में अपने ग्रामीण महिलाओं को इस उद्योग ने एक अलग पहचान दी है जिसमें विशेष मौके पर कोहबर व सोहराई बनाने वाली वे 21 ग्रामीण महिलायें भी शामिल हैं जिन्होंने पर्यटन व वन विभाग के एक योजना के तहत बिरसा मुंडा जैविक उद्यान, ओरमांझी, राँची, झारखंड में 16 हजार वर्ग फीट दीवारों पर कोहबर व सोहराई की कलाकृतियाँ बनायीं। सात लाख की लागत वाली विविधता भरी पेंटिग हजारीबाग के छह गाँवों जोरखअ खराटी, भादुली-पिपराधी, सहेदा, भेलवाड़ा, दीपूगढ़ा गाँवों की 21 मजिला कलाकारों ने बनायी है। इन महिलाओं द्वारा प्रकृति व जंगली जीवन को दीवारों पर उकेर कर इसे जीवंत कर दिया गया है। पेंटिग में औसतन 10 गुणा 8 फीट के 179 फ्रेम हैं। इनमें कोई दोहराव नहीं है। यानी हर पेंटिग दूसरे से अलग हैं।

महिलाओं के जागरुकता के कारण ही सरकार ने केन एंड बंबू टेक्नोलॉजी सेंटर, गुवाहाटी के सहयोग से मोल्डेड फर्नीचर बनाने के प्रशिक्षण में पुरुषों के साथ महिलाओं की भागीदारी भी सुनिश्चित किया है। हालाँकि, सरकार के इस निर्णय में महिलाओं की संख्या पुरुषों की तुलना में एक-तिहाई ही निर्धारित किया जा सका है क्योंकि इस क्षेत्र में महिलायें बहुत कम कार्यरत हैं। हर्ष की बात यह है कि हस्तशिल्प के अनेक सेक्टर मृतप्राय थे। इन क्षेत्रों में 1210 से अधिक ग्रामीण महिलाओं को जोड़ा गया जिन्होंने 5 करोड़ के सामान बनाये। झारखंड के उद्योग विभाग के विशेष सचिव सह निदेशक के अनुसार, वर्तमान में संपूर्ण झारखंड में कार्यरत 6730 ट्रेड महिलायें 15 करोड़ का कारोबार करने वाली हैं।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

झारखंड के हस्तशिल्प उद्योग में जनजातीय महिलाओं की भूमिका

डॉ० नम्रता गौरव
असि.प्रो., समाज शास्त्र,
कमला नेहरू कालेज,
बिलासपुर विश्वविद्यालय,
बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

अर्थात् हस्तशिल्प उद्योग में महिलाओं की वर्तमान उपलब्धि शानदार के साथ गर्व करने योग्य हैं। ये ग्रामीण महिलायें आत्मनिर्भर होने के साथ जागरुक भी हुई है। अपने परिवार में इन्हें सम्मान प्राप्त हुआ है। बच्चों की पढ़ाई-लिखाई के साथ घर के अन्य छोटे-बड़े मसलों पर ये निर्णय लेने लगीं हैं, लेकिन, इस उद्योग में महिलाओं को अभी भी अनेक फासले तय करने हैं क्योंकि इस क्षेत्र में कार्यरत महिलायें अभी भी अनेक समस्याओं से ग्रस्त हैं।

समस्यायें-

इन महिलाओं की काबिले तारीफ बात यह है कि इनमें अधिकांशत: अशिक्षित व गरीब महिलायें शामिल हैं। हस्तशिल्प उद्योग में शामिल महिलाओं की आर्थिक स्थिति अत्यंत निम्न है। झारखंड में हस्तशिल्प उद्योग में ज्यादातर आदिवासी महिलायें जुड़ी हैं, जिनका व्यवसाय खेती-बाड़ी व पशुपालन ही मुख्य तौर पर है। अत: ये महिलायें संचार साधनों से हीन हैं जिस कारण इन जैसी महिलाओं के लिए सरकार द्वारा प्रशिक्षण का कौन सा कार्यक्रम या योजनाओं को चलाया जा रहा है, यह इन्हें ज्ञात नहीं हो पाता है। अध्ययन के द्वारा यह तथ्य भी सामने आया कि महिलायें प्रशिक्षित हो रही थी वे अपने परिवार, इसके पश्चात अपने टोलों अथवा गाँवों की परिचित औरतों को ही प्रशिक्षण अथवा हस्तशिल्प उद्योगों से जोड़ने में ज्यादा दिलचस्पी लेती हैं जिस कारण अनेक हुनरमंद औरतें आज भी किसी प्रोत्साहन के न मिल पाने के कारण इन कार्यों में दिलचस्पी नहीं लेती हैं। इतना ही नहीं अन्य गाँवों में प्रशिक्षण केंद्र होने के कारण तथा घर से वहाँ तक पहुँचने में ग्रामीण सड़के भी इनके लिए बाधा उत्पन्न करती हैं।

इन्हें प्रशिक्षित करने वाली संस्थायें भी इनके लिए समस्यायें पैदा करती हैं जैसे : राशि प्राप्ति के लिए महिलाओं की संख्या भागीदारी पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है, जबकि बढ़ती भागीदारी के जरुरत के हिसाब से प्रशिक्षण के सामान जल्द उपलब्ध नहीं कराये जाते हैं। कभी-कभी सरकारी सहायता पर चल रहे इन प्रशिक्षण केंद्रों को एक निश्चित समय में निश्चित प्रतिभागियों की संख्या सुनिश्चित करने का आदेश दिया जाता है। अत: एक निश्चित संख्या तक प्रतिभागी मिल जाने पर अन्य लोगों को मौका देने के रफ्तार में कमी आ जाती है। कच्चे मालों को प्राप्त करने में इन्हें अभी भी सामाजिक परंपराओं का निर्वहन करना पड़ता है, जैसे: बाँस काटने का कार्य स्त्रियों के बजाय पुरुष करते हैं। इन्हें चीरने-फाड़ने तक का कार्य पुरुष की जिम्मेदारी में होता है। जहाँ अधिकतर पुरुष बांस के सामानों में टोकरियों व सूपों का निर्माण करते हैं, वहीं औरतें अधिकतर चटाईयां बिनने में माहिर होती हैं। इसी तरह लाह की खेती में पौधा रोपण, जोताई-बुआई स्त्रियों के हाथों में न होकर पुरुषों पर निर्भर रहता है। कच्चे मालों की उपलब्धता के लिए इन्हें प्रशिक्षण केंद्रों पर निर्भर रहना पड़ता है और अनेक जगहों पर स्वयं को माल खरीदकर व्यवसाय करने की परंपरा का निर्वहन नहीं किया जाता है।

प्रशिक्षण स्थल वस्तुओं के निर्माण में केमिकलों का प्रयोग (बांस व लाह की चूड़ियों व ग्रास मैट वीबिंग में) बहुतायत में किया जाता है, जबकि औरतों को इन केमिकलों का प्रयोग करने की विधि बता दी जाती है जबकि उससे होने वाली हानियों तथा बचाव का उपाय नहीं बताया जाता है। महिलाओं के स्वास्थ्य पर इसका असर साफ दिखता है। अनेक ऐसे हस्तशिल्प उद्योग हैं जहाँ औरतों की संख्या अत्यधिक कम है जिनमें चर्म शिल्प, कृत्रिम ज्वेलरी व वूड क्राफ्ट का निर्माण इत्यादि प्रमुख है। हस्तशिल्प उद्योग में औरतों की अन्य समस्या बाजारवादी व्यवस्था में वास्तविक मूल्य की बजाय निर्धारित मूल्य पर निर्भर होना है जो प्राय: उनके शोषण का एक सूचक हैं।

निष्कर्ष-

हस्तशिल्प उद्योग में झारखंड की महिलाओं की वर्तमान उपलब्धि व समस्याओं का अध्ययन करने के पश्चात् नि:संदेह कहा जा सकता है कि इस क्षेत्र में कार्यरत महिलायें अपनी भूमिका से संतुष्ट नहीं हो सकती हैं। अगर कार्य व प्रशिक्षण ने इनके अंदर साहस व उत्साह का संचार किया है तो कहीं न कहीं इन्हें अपनी लाचारी व विवशताओं पर सोचने पर मजबूर भी किया है। अब कहीं स्थिति यह न उत्पन्न हो जाये कि बढ़ती महिलाओं की संख्या और सरकारी उपेक्षा के कारण इन कलाओं में रोजगार की व्यवस्था न हो सके और ग्रामीण औरतें पुन: इसे अपनी एक विडम्बना मानकर गरीबी, भुखमरी व बेगारी का शिकार होने लगे। अत: इन

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

झारखंड के हस्तशिल्प उद्योग में जनजातीय महिलाओं की भूमिका

डॉ० नम्रता गौरव
असि.प्रो., समाज शास्त्र,
कमला नेहरू कालेज,
बिलासपुर विश्वविद्यालय,
बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

समस्याओं से निपटने के लिए सरकार को ठोस पहल करना जरूरी है जिसके लिए निम्न सुझाव लाभप्रद हो सकते हैं।

सुझाव-

1. हस्तशिल्प उद्योग में महिलाओं की सहभागिता सुनिश्चित करने हेतु ट्रेड सेंटरों की संख्या बढ़ायी जानी चाहिए।
2. सुदूर गाँवों से पहुचने वाली वैसी हुनरमंद महिलाओं के लिए प्रशिक्षण का अन्य विकल्प भी बनाना आवश्यक है। जो महिलाएँ तंग रास्तों में पैदल चलकर वहाँ कठिनता से पहुँचती हैं जिस कारण प्रशिक्षण की अवधि पूर्ण होने से पूर्व ही उनका प्रशिक्षण लेना छूट जाता है।
3. प्रशिक्षण केंद्रों में उन लोगों को शामिल करना चाहिए जिनकी पहुँच ग्रामीण इलाके में दूर-दूर तक हो।
4. ग्रामीण इलाके में संचार तंत्र के साथ-साथ संपर्क सूत्रों का भी प्रयोग करना चाहिए। इसके लिए एक महिला पर एक निश्चित संख्या निर्धारित कर देनी चाहिए कि वे महिलायें उतनी संख्या में अन्य महिलाओं को भी इस उद्योग से जोड़ें।
5. प्रशिक्षण के समय प्रतिभागी महिलाओं के चयन में इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि एक ही गाँव की औरतों के चयन के बजाय अन्य गाँवों की महिलाओं का चयन हो अर्थात् परिवार के साथ-साथ समाज का भी विकास संभव हो सके।
6. प्रशिक्षण के साथ-साथ तैयार माल की खपत का उत्तम प्रबंध करना आवश्यक है। इसके लिए स्थानीय बाजारों के अलावा अन्य बाजारों को विकल्प के तौर पर तैयार करना जरूरी है।
7. ग्रामीण महिलाओं के लिए हस्तशिल्प के वैसे उद्योगों में भी अपना हुनर दिखाने का मौका दिया जाना चाहिए, जिसमें महिलाओं की भागीदारी सामाजिक वर्जनाओं के कारण अभी तक सुनिश्चित नहीं है। जैसे वूड क्राफ्ट।
8. इस क्षेत्र में औरतों की बढ़ती संख्या उपेक्षा का शिकार न हो इसके लिए पूँजीगत लाभ व रोजगार सृजन करना आवश्यक है। इसके लिए मोमबती निर्माण, हर्बल सोप उत्पादन व पॉटरी पर स्क्रीन पेंटिग के गृह उद्योगों का हस्तशिल्प उद्योग में मिलाकर इन्हें एक नया आयाम प्रदान करना चाहिए।
9. झारखंड प्राकृतिक संपदाओं से परिपूर्ण राज्य है। अतः हस्तशिल्प उद्योगों में प्रकृति की सुरक्षा, औरतों की स्वास्थ्य रक्षा तथा उद्योगों की सफलता पर ध्यान देने और व्यापक तौर पर इसका जानकारी जुटाने हेतु समय-समय पर इनसे जुड़े विषयों पर सम्मेलन अथवा विचार-गोष्ठी सरकारी तौर पर आयोजित करना आवश्यक है।
10. महिलाओं को उनके कार्य की सही कीमत मिल सके इसके लिए उत्पादित वस्तुओं के लागत दर का निर्धारण सही तरीके से निश्चित करना आवश्यक है।

संदर्भ सूची-

1. कुजूर, सिलवानि, झाारखंड में हस्तशिल्प उद्योग, शिवांगन पब्लिकेशन, राँची, 2003, पृ0 2
2. तिरकी, लगनु, झारखंडी हस्तशिल्प उद्योग में विविधता का दर्शन, रुचिका पब्लिकेशन, गुमला, 2007, पृ0 12
3. प्रसाद, उमाशंकर, झारखंड के गरीब और हस्तशिल्प उद्योग, रुचिका पब्लिकेशन, गुमला, 2012, पृ0 24
4. उपाध्याय, अमित, जनजातीय महिलाएँ और महिला सशक्तिकरण, अमित प्रकाशन, धनबाद, 2005, पृ0 104
5. टेटे, वंदना, जनजातीय महिलाओं में कार्यदक्षता का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, देवी काली पब्लिकेशन, पाटन, झारखंड, पृ0 3